भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त
आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 04 | उदयपुर सोमवार 01 मार्च 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कांठेड़जी रचित तीर्थंकरों के सात महाकाव्य

श्री मनोहरलाल कांठेड़ ऐसे प्रथम और एकमात्र महाकाव्यकार हैं जिन्होंने तीर्थंकरों से सम्बन्धित सात महाकाव्यों की रचना कर अपनी गूढ़ काव्यशक्ति का परिचय दिया। ये महाकाव्य प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, अरिष्टनेमि, सुव्रत स्वामी, अष्टादश तीर्थंकर चरित्र और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी से सम्बन्धित हैं।

जैन परम्परा एवं मान्यता का उदात्त ढंग से निर्वाह करते हुए कविवर कांठेड़जी ने इन महाकाव्यों में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धर्म-दर्शन विषयक परिस्थितियों का बड़े ही सरस, सरल एवं रोचक ढंग से वर्णन किया है। इन महाकाव्यों की यह विशेषता है कि ये मालवी में लिखे गये हैं जिसकी हजार वर्षों की उत्कृष्ट सृजन परम्परा है। इस दृष्टि से कांठेड़जी ने मालवी भाषा में रचना कर न केवल अपनी मतृभाषा को आलोकित किया बल्कि एक साथ सभी तीर्थंकरों के जीवनादर्शों पर लिख कर प्रथम महाकाव्यकार होने का ऐतिहासिक गौरव अर्जित किया साथ ही अपनी मातृभाषा का ऋण भी उतारा है।

शास्त्रों में उल्लिखित घटना-प्रसंगों तथा जन-मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए कवि ने मालवी लोकसंस्कृति की जीवनधर्मिता तथा स्थानीयता के महत्व को दिग्दर्शित करने की भरपूर कोशिश की है। उदाहरण के लिए भगवान ऋषभदेव के नखशिख वर्णन में उनके सिर, आंख, नाक, होठ तथा बालों की उपमा का यह अंदाज दृष्टव्य है जिसमें कहा गया है-

माथो जाणे पहाड़ की चोटी के आकार हरिको लागे है।
आंखा प्रभु री जाणे कमल रो सफेद फूल लागे है॥
प्रभु ऋषभ रो नाक गरूड़ चोंच हरिको लागे है।
होठ गणा नज लागे एकदम लालचट है॥
माथा रो एक-एक बाल सेमल रुई सो है।

अर्थात् भगवान ऋषभदेव का सिर पहाड़ की चोटी, आंखें सफेद कमल का फूल, नाक गरूड़ की चोंच, होठ एकदम लालिमा लिए और सिर का एक-एक बाल सेमल रुई की तरह है। इस तरह की उपमाएं कवि की नवीन दृष्टि की सूचक हैं जिनमें स्थानीय मालवी संस्कृति के रंगबोध की छाप दर्शित होती है। यही कारण है कि कवि की वर्णनशैली में मालवी का माधुर्य, उसकी गतिशीलता का प्रवाह तथा लोकाचारों एवं लोकविश्वासों का अपनापा सहज प्रस्फुटित हुआ मिलता है।

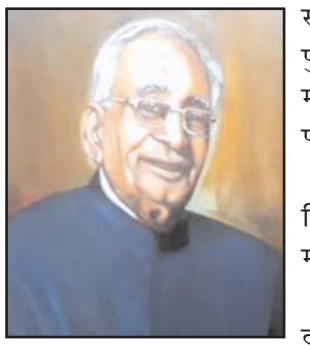

मनासा के लोकमनीषी डॉ. पूरन सहगल द्वारा संस्थापित मालव लोकसंस्कृति प्रतिष्ठान द्वारा उज्जैन में आयोजित कांठेड़जी के सम्मान समारोह में मुझे भी आमंत्रित किया गया तब कांठेड़जी से मिलकर मुझे अति प्रसन्नता हुई और यह लगा कि पिचहतर पार का काव्य-संसार लिए कांठेड़जी अपनी काव्य-साधना में अंत:पैठ लिए हैं। इस अवसर पर आसपास के कस्बों और गांवों के जैन जगत के वरिष्ठ श्रावक भी उपस्थित थे जिन्होंने कांठेड़जी का अपने संघ की ओर से भावभीना अभिनंदन किया।

समारोह में विक्रम विश्वविद्यालय की गौरवपूर्ण गरिमामय हिन्दी परम्परा के सुविज्ञ सुलेखक डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा के सम्पादन में प्रकाशित 'मालव मनोहर' नामक पुस्तिका का लोकार्पण वहां के पुलिस महानिरीक्षक, श्रेष्ठ कवि एवं प्रबुद्ध विचारक पवन जैन ने किया।

पुस्तिका में रचनाकार के सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा बड़े ही महत्वपूर्ण एवं मूल्यांकनपरक मत-सम्मत प्रकट किये गये हैं।

डॉ. शर्मा ने कहा कि कांठेड़जी जैनधर्म, दर्शन एवं संस्कृति के ज्ञाता, सुधर्मी विद्वान ही नहीं, अपने जीवन में भी पूर्णरूपेण साधुमना संस्कारी हैं। उनके द्वारा रचित महाकाव्यों में लोकचित्त का जो रचाव और जीवनदर्शन है वह गेयता की दृष्टि से अधिक माधुर्य लिए है। ऐसा लेखन बौद्धिक चेतना से अधिक लोकचित्त की आराधना का ही आनन्द होता है।

डॉ. सहगल के अनुसार कांठेड़जी लिखित प्रत्येक महाकाव्य अपने कलेवर में 2400 छंद की विपुल संख्या लिए है किन्तु इनमें से कोई महाकाव्य प्रकाशित नहीं है। जैन समाज के लिए ये महाकाव्य अप्रतिम धरोहर हैं किन्तु इनका प्रकाशित नहीं होना विडम्बना ही है।

जैन समाज को चाहिये कि जीवनभर अपनी साधना से उत्कृष्ट कृतियों का सृजन करने वाले कांठेड़जी की कृतियां उनके जीवनकाल में प्रकाशित कर उनका उचित अभिनन्दन करे ताकि नई पीढ़ी को भी प्रेरणा मिल सके और श्रीसंघ भी उनके श्रेष्ठ-उत्कृष्ठ अवदान से ऋण मुक्त हो सके।

- भा.

ऋषभदेवजी, पार्श्वनाथजी तथा महावीर स्वामी

लोककला की समझ और नीयत का पराभव

संस्कृति वह वटवृक्ष है जिसकी घनी छाया वर्तमान में होती है तो गहरी जड़ें अतीत में। उन जड़ों के बिना इस विशाल वृक्ष का खड़ा हो पाना भी सम्भव नहीं है। निसन्देह आज हम अपने पूर्वजों से अधिक जानते हैं और उनसे अधिक तरह के काम कर सकते हैं। इसका कारण सर्वप्रथम यह है कि हमारे से पहले संस्कृति का जो भवन निर्मित हो चुका है, उसमें हम नई-नई मंजिलें जोड़ते जा रहे हैं। लोकसंस्कृति के बारे में जो स्थिति पैदा हुई है उससे लगता है कि हम जड़ें काटकर पत्तों को सींच रहे हैं। हवा में महल बना रहे हैं।

यह ऐसा राग है जिसमें अनेक वाद्य एक साथ बजते हैं। किसी वाद्य का एक तार भी ढीला हो जाय तो पूरा राग चौपट हो सकता है। हम लोकसंस्कृति के संरक्षण की बात करते हैं तब लोकसंस्कृतिकर्मियों को पूरी तरह से नजरअन्दाज कर दिया जाता है। कभी-कभी तो हम उन्हें आदमी तक की हैसियत देने को राजी नहीं होते। संस्कृतिकर्मियों की जैसी दुर्गति आजाद भारत में हुई वैसी शायद किसी युग में न हुई। हमारे अच्छे संस्कृतिकर्मी राजनीति या मीडिया के चाकर होकर रह गये हैं। जो नहीं हुए हैं वे मुफलिसी में जीने का अभिशाप भोग रहे हैं।

लोकसंस्कृति के संरक्षण की बात करते हैं तब लोकसंस्कृतिकर्मियों को पूरी तरह से नजरअन्दाज कर दिया जाता है। कभी-कभी तो हम उन्हें आदमी तक की हैसियत देने को राजी नहीं होते। संस्कृतिकर्मियों की जैसी दुर्गति आजाद भारत में हुई वैसी शायद किसी युग में न हुई। हमारे अच्छे संस्कृतिकर्मी राजनीति या मीडिया के चाकर होकर रह गये हैं। जो नहीं हुए हैं वे मुफलिसी में जीने का अभिशाप भोग रहे हैं।

संस्कृति के नाम पर छलावा है लेकिन मीडिया की सांठ-गांठ से वही असली के भाव बिकता है। उसी का बाजार आजकर गर्म है और इसी में एक प्रयास यह भी जुड़ा हुआ लगता है कि हमारी लोकसंस्कृति को जनमानस से काट कर अजायबघर की वस्तु बना दिया जाय।

कुछ लोग तो संस्कृति को कोई ऐसी चीज मानते हैं जो हवा में पैदा होती है और उसके बिना भी जीवन की समरसता बनी रह सकती है। उमंग मरती नहीं है। ऐसे लोगों को समझा पाना और भी ज्यादा मुश्किल है जो संस्कृति को धर्म के घेरे में लेकर बात करने के आदी हो चुके हैं। संस्कृति का जो भाग इस घेरे में नहीं आ पाता उसको वे संस्कृति मानने से भी इंकार करते हैं। लोकसंस्कृति ऐसे लोगों की अधूरी समझ और गलत नीयत का शिकार हुई है।

जिस जनता का पसीना काफी सस्ता होकर पूंजीवादी हाट में बिका उसने अपनी सांस्कृतिक विरासत को हर कीमत पर बचाये रखा है। जनता जिन्दगी के प्रति जितनी आस्थावान होगी वह लोकसंस्कृति के प्रति उतनी ही सचेष्ट होगी। अपनी लोक परम्पराओं का आदर करना सीखें। उन्हें बाजारू वस्तु न मानें। मीडिया पर इस बात के लिए रोक लगायें कि वह लोककलाओं के नकली रूप को प्रस्तुत न करे। कम से कम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अपने केमरा पर नियंत्रण रखना ही चाहिये। लोककलाओं के कार्यक्रम अब स्टूडियो में रिकॉर्ड करने की दूषित परम्परा से बचना ही चाहिए।

-पुन्नीसिंह

पोथीखाना

जीवन व्यवहार की सप्तरंगी सुरसरी

जीवन व्यवहार को व्यावहारिक जीवन की सीख देने वाली आर्ट पेपर पर

विविध रंगी छपाई और सुहावने चित्रों से युक्त 144 पृष्ठीय आड़ी खुलने वाली बड़ी साइज की पुस्तक प्रत्येक श्रावक समाज के लिए पठनीय चिन्तनीय है।

'सात रंग के सपने' के बारे में लेखक मुनि मनितप्रभसागर लिखते हैं- जैन समाज के सन्दर्भ में देखे गये सपनों की मेरी साकार अभिव्यक्ति है। वस्तुत: इन सपनों को वास्तविकता का जामा पहनाकर ही कोई भी जैन श्रावक बन सकता है पर उसके लिए स्वयं को शिल्पकार की गोद में सौंपना होगा। हमारा जीवन एक तस्वीर है। इसमें रंग सजाने वाले कलाकार हम स्वयं ही हैं। हम चाहें तो मृदुता, ऋजुता, मधुरता के सुहाने और सौम्य रंगों से जीवन की आकृति को संस्कृति का आकर्षक उपहार बना सकते हैं और चाहें तो तनाव, टकराव, मनमुटाव के विकृत रंगों से जीवन की प्रतिकृति को भयावह अभिशाप भी बना सकते हैं।

पुस्तक के प्रारम्भ में अमृत वचनम् के जरिये आचार्य जिनमणिप्रभसूरि लिखते हैं- व्यवहार जगत के जीवन के लिए प्रस्तुत पुस्तक प्रकाश का प्रतिबिम्ब है। व्यवहार का औचित्य समझने वाला यह अद्भुत ग्रंथ है। इसमें उन छोटी-बड़ी बातों एवं क्रियाओं का विश्लेषण है जिन पर हम अधिकतर ध्यान नहीं दे पाते। इस दृष्टि से यह पुस्तक जीवन परिवर्तन की व्यावहारिक पोथी है। जहाज मन्दिर, मांडवला जिला जालोर से प्रकाशित यह पुस्तक 180 रूपये मूल्य की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

समता समय और स्वभाव का विधान है सामायिक

सामायिक की सीख के सम्बन्ध में लेखक मुनि मनितप्रभसागर का यह कथन उल्लेखनीय है- 'सामायिक' समता, समय और स्वभाव तीनों की एकरूपता का विधान है।

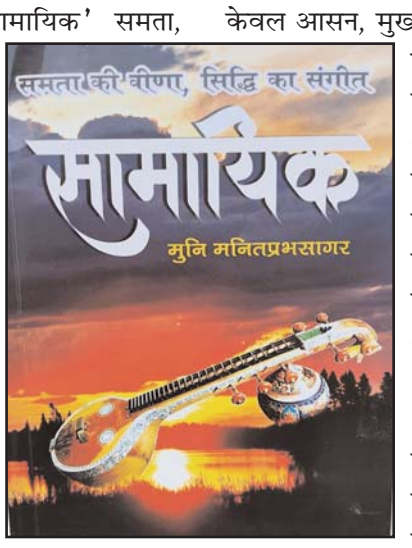

इस विधान के निर्देशक अरिहंत, अनुभावक सिद्ध, संचालक साधु और धारक धर्म है। बारह भावनाओं, आठ प्रवचन कलाओं और चार सुख शैय्याओं की धारिणी सामायिक का अवधारण श्रावक व साधु दोनों के लिए अनिवार्य है।

कुल 112 पृष्ठीय 30 रूपये मूल्य की इस पोथी में सामायिक विषयक 30 शीर्षकों में विविध ढंग से शास्त्रोक्त वर्णन किया है।

प्रारम्भ में आशी के अन्तर्गत आचार्य जिनमणिप्रभसूरि के आशीर्वाद कथन में कहा गया- सामायिक की प्ररूपणा तीर्थंकरों की अद्भुत अनुकृति है। यह केवल आसन, मुख वस्त्रिका आदि बाह्य उपकरणों से जुड़ा कोई सामान्य विधान नहीं है अपितु मन वचन और काया, इन तीनों को समता में नियोजित करने का महाविधान है। सामायिक 45 आगमों का सार है।

(पृष्ठ 5)

शास्त्रकारों ने लिखा है- समस्त जीवों पर समभाव रखना, पांचों इन्द्रियों का संयम करना, अन्तर्मन में शुभ भावना रखना तथा आर्त्त व रौद्र ध्यान का त्याग करना सामायिक है। पुस्तक श्री जिनक्रान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला-343042 जिला जालोर से प्रकाशित है।

- डॉ. कहानी भानावत

कृष्ण का भविष्य कथन

मांड प्रदेश की त्रिकोण पहाड़ी पर जिसे त्रिकुट पर्वत भी कहा जाता था, एक प्राचीन जलकूप था। वहाँ पर पशु तथा आस-पास के लोग पानी पीते थे। इस क्षेत्र में एक किवदंती प्रसिद्ध थी कि किसी समय जैसल नाम का व्यक्ति यहाँ आयेगा तथा अपना राज्य स्थापित करेगा।

मरू प्रदेश से होकर मथुरा, पंजाब आदि स्थानों के यात्री द्वारका के लिए यहाँ होकर आते-जाते थे। यह प्रदेश निर्जल प्रदेश था। सरस्वती जमीन में प्रवाहित हो चुकी थी। चारों ओर रेगिस्तान अपनी विशाल बाहें फैलाये पसरा हुआ था।

एक बार अर्जुन और कृष्ण इस मरू प्रदेश से होकर द्वारिका जा रहे थे। अर्जुन को बहुत जोर से प्यास लगी। उसने कृष्ण को पानी के लिए निवेदन किया। दूर-दूर तक पानी नहीं था। इस समय श्रीकृष्ण ने त्रिकूट पर्वत पर सुर्दशन चक्र से कुआ खोदकर पानी निकाला और अर्जुन की प्यास बुझाई। कहा, किसी समय मेरे वंश में जैसल नामक व्यक्ति यहाँ पर राज्य करेगा तथा यह प्रदेश प्रसिद्ध हो जायेगा।

यह काव्योक्ति आज भी इस प्रदेश में प्रसिद्ध है -

जैसल नाम नो नृपति,
यदुवंश में इक थाय।
कीणी काल के मध्य में,
इण था रह सी आय।।

-नन्दकिशोर शर्मा

लोकसंस्कृति में इतिहास की प्रामाणिकता की तलाश

- प्रो. विनोद तनेजा -

भारतीय इतिहास की प्रामाणिक तलाश 'लोक' के आधार पर ही की जा सकती है। इतिहास को प्रस्तुत करने वाली लोक परम्परा भारतीय इतिहास के चिरंतन को विकासशील सन्दर्भ में प्रस्तुत करने वाली रही है। अत: यह लोक परम्परा हमारे जातीय जीवन की समग्रता को पहचानने में एक नई दृष्टि देती है।

सभ्यता जीवन के भव्य भवन की ऊपरी सजावट का रूप है पर इस भवन की नींव तो वहां की संस्कृति में ही केन्द्रित होती है। लोक-संस्कृति ही जन-जीवन के आदर्शों को दृढ़ता एवं स्थिरता प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था को जीवित रखने में सहायता करती है।

परम्परानुगत आध्यात्मिक ज्ञान को सुरक्षित रखने में, लोकमानस में सौन्द्रर्यानुभूति जाग्रत करने में, सामाजिक व्यवहार की शिक्षा में तथा अन्य महत्वपूर्ण परम्परागत विषयों के अन्तर्गत मूल्यवान सूचनाओं को संरक्षित रखने में इसका अभूतपूर्व योगदान रहता है। लोक-संस्कृति अपनी भावनाओं के मूल में किसी भी समाज की स्पष्ट किन्तु गहरी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने में समर्थ होती है।

लोक-संस्कृति किसी भी देश, समाज या जाति के इतिहास के उन चिन्हों को दिखाती है जिनको छुपा कर कोई भी इतर सत्ता अपने महत्व को, उस क्षेत्र की वास्तविकता को उससे दूर कर उसे हीनभावना से ग्रसित कर देती है। इसी कारण यह कहा गया है कि 'यदि किसी देश, जाति या समाज को नष्ट करना हो तो उसे उसकी परम्पराओं, लोकमान्यताओं व लोकविश्वासों से अलग कर दो।'

लोक-संस्कृति ही मानवीय चेतना के वास्तविक इतिहास को सुरक्षित रखकर समाज को उसकी वास्तविकता से परिचित करा सकती है अन्यथा दूसरी मान्यताएं तो ऊपरी चमक-दमक व प्रभाव से किसी भी क्षेत्र की असलियत को वहां के निवासियों से दूर कर हावी हो जाती हैं।

भारतीय परम्परा के सन्दर्भ में तो यह बात और भी स्पष्ट है कि यहां का एक सुदीर्घ कालखण्ड विदेशी परम्पराओं की औपनिवेशिकता के अधीन रहा, परिणामत: यहां की स्थानीयता का परिचय उस समय के आश्रय में रहकर लिखने वालों की कलम से ठकुर सुहाती करने में ही संलग्न रहा। वास्तविकता तो मात्र लोकप्रथाओं में ही सिमट कर लोक पक्ष में ही कहीं-कहीं मुखरित होती रही। इस अल्पता को भी हर तरह से जन विमुख करने का प्रयास शासन वर्ग की ओर से होता रहा।

सम्भवत: इसी कारण जब विदेशी सत्ता से सन् 1947 में मुक्ति मिली तो गृह विभाग के संरक्षक सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा था- 'हमें हमारे भारत का निर्माण हमारी खुद की शिक्षा और संस्कृति के आधार पर करना चाहिये पर आधुनिकता के नाम पर भारतीयता व उसकी सांस्कृतिक विरासत के साथ जो खिलवाड़ हुआ उसे आज भारत का जनमानस भोग रहा है।'

वस्तुत: भारत की परम्परा जो उसके बृहत्तर रूप को प्रस्तुत करने में समर्थ है, यहां की लोक-संस्कृति में सुरक्षित है। इस लोक-संस्कृति को भले ही विदेशी चकाचौंध से प्रभावित 'मूढ़मति' मानें पर यहां के अति परम्परित लोकगीतों, लौकिक, रीतिरिवाजों, लोकप्रथाओं, लोककलाओं के रूप में जो स्थानीय लोकभाषा में लोकभाव मिलते हैं वही यहां के वास्तविक इतिहास का द्योतन कराने में समर्थ है।

इतना तो निश्चित है कि लोक-संस्कृति प्रकृति में पनपती है। इसको पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर जन-जीवन में प्रचलित विभिन्न मौखिक परम्पराओं में मिलता है। काबली चने, कंधारी अनार, ढाके की मलमल, कसूरी जूती, पेशावरी खेड़ी (चप्पल) जिन नगरों से सम्बन्धित है, वे सभी नगर आज भारत में नहीं है।

लोकजीवन की वस्तुस्थिति एक ऐसी अन्त:सलिला लोक-संस्कृति भारतीयता की नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना जिस रूप में साधारण जनजीवन में मिलती है उसका परिचय उस इतिहास में नहीं मिल सकता जो किसी के प्रभाव में मात्र ठकुर सुहाती के लिए लिखा गया हो। किसी भी क्षेत्र, समाज या परम्परा का इतिहास तो सामान्य लोक की भावना के साथ बिना बनावट के सहज दिनचर्या के साथ जुड़ी उन लोकप्रथाओं, लोकप्रसिद्धियों, लोकप्रसंगों के विविध लोक-सांस्कृतिक पक्षों में मिलता है जो सामाजिकों के अन्तस में रचा-बसा होता है। इस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं होता। टोने-टोटके, पहेलियां, चुटकले यहां तक कि प्रचलित गालियों में जो सहज मन की अभिव्यक्ति जिस प्राकृतिक सहज रूप का आभास कराती है वह निश्चित रूप से इतिहास को छद्मपक्षों से दूर ले जाकर मानवीय चेतना को वास्तविकता से परिचित कराने में समर्थ होती है।

इस भाव से आज नृत्यशास्त्री मनोवैज्ञानिक भी इतिहास-बोध में लोक-संस्कृति के ज्ञान की आवश्यकता महसूस करते हैं और यह मानते हैं कि लोक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य ही इतिहास के अन्तराली क्षणों के रिक्त स्थान भर सकने में समर्थ है।

बांसवाड़ा-उदयपुर रोड़ स्थित जलाशय पर जलक्रीड़ा करते ग्रे लेग गूज पक्षी : फोटो- भरत कंसारा

अपना देश अपनी संस्कृति

पर हित प्राण न्यौछावर करते जानवरों की समाधियां

हमारा देश कई प्रकार की विचित्रताओं से भरापूरा है जिसकी सानी विश्व में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती, पर राजस्थान इन विचित्रताओं में अपनी विशिष्ट विलक्षणता लिए है। सतियों के स्मारक भी यहां पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। मानव हित के लिए किये गए विशिष्ट कार्यों के लिए यहां का मनुष्य किसी को आदर देने में कभी नहीं चूका। गांवों के देवरों में प्रतिष्ठित देवी-देवता और लोकजीवन में प्रचलित कथा-आख्यान, गीत-कथा इसके साक्षी हैं कि जिसने भी यहां पर हित के लिए प्राणों को उत्सर्ग कर दिया वह सदा-सदा के लिए अमर हो गया। यह बात मनुष्य के साथ ही नहीं, जानवर तक के साथ घटित हुई मिलती है।

किन्हीं जानवरों में मानवीय किंवा देवीय गुणों को परख कर तदनुसार उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने की भी यहां बड़ी प्राचीन परम्परा रही है। कई सांडों, बन्दरों, गायों, कुत्तों, सांपों, मोरों, हाथियों के ऐसे कथा-किस्से मिलेंगे जिनके सुकृत्यों के फलस्वरूप यहां के लोगों ने उनकी मृत्यु के पश्चात उनके स्मारक बनाये हैं। समाधियां खड़ी की हैं। बड़े-बड़े भोज दिये हैं। शव-यात्राएं निकाली हैं। बस्तियों का नामकरण किया है। मन्दिर प्रतिष्ठित किये हैं। हवन-कीर्तन किये हैं। जानवरों को भोजन पर न्यौता है और उनकी अस्थियां तक गंगाजी में प्रवाहित की हैं। इससे यह स्पष्ट है कि हमारे यहां गुण-पूजा को प्रधानता सदैव-सदैव दी जाती रही है चाहे वह जानवर भी क्यों न हो।

गाय को हमारे यहां माता कहा गया है। प्राचीन शास्त्रों में भी इसके कई उल्लेख मिलते हैं। बहिन-बेटी को शादी के पश्चात गाय दी जाती है। वछ बारस का त्यौहार ही गाय-पूजा का है। गायों के साथ-साथ बछड़ों का भी हमारे यहां बड़ा प्यार-आदर है। दीवाली पर हीड़ गाई जाती है जिसमें गो-पुत्र को सर्वाधिक महत्व-गौरव दिया जाता है। दीवाली के दूसरे दिन गांव-गांव बैलों की विशेष पूजा की जाती है। चोपों में गायें भड़काई जाती हैं और उन्हें लपसी-चावल का भोजन कराया जाता है।

जयपुर जिले के सुमेरपुर के निकटवर्ती गांव बीसलपुर में गाय-बछड़े का बड़ा भव्य मंदिर बनाया गया जिस पर 60 हजार रूपये खर्च किये गये। इस मंदिर के पीछे भी एक अजीब घटना-प्रसंग जुड़ा हुआ है। सन् 1974 की जलझूलनी एकादशी को इस गांव की महिलाओं ने पांच दिवसीय उपवास किया और एक गाय तथा बछड़े का पूजन किया। आखिरी दिन उपवास खोलने के एक घंटे पहले वह गाय मृत्यु को प्राप्त हुई। गांव वालों ने सोचा गाय बड़ी पुण्य वाली थी। पूर्व जन्म में उसके द्वारा किये गये अच्छे कार्यों के फलस्वरूप उसे महिलाओं का पूजापा मिला और उपवास के दौरान उसने शरीर छोड़ा अत: उसकी स्मृति को अमर रखा जाना चाहिये। इसी भावना ने वहां मंदिर का निर्माण कराया और उसमें गाय-बछड़े की पत्थर की बनी प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। आसपास के लोग आज भी बड़े श्रद्धाभाव से मंदिर के दर्शन करते हैं और गाय-बछड़े के प्रति सम्मान के भाव ग्रहण करते हैं।

गाय-बछड़े के साथ-साथ सांड को भी बड़ी पूज्य भावना से देखा जाता है। मारवाड़ में तो इन सांडों को लोग प्रतिदिन नियमित रूप से मिठाई आदि खिलाते भी देखे गए हैं। कभी किसी दुकान में यदि किसी सांड ने कोई चीज खा ली तो भी दुकानदार उसके प्रति बुरी भावना नहीं लाएगा। शेखावाटी के फतहपुर में तो सांड का एक स्मारक बना हुआ है जिसके साथ एक शिलालेख तक एक सेठ ने लगवाया था। कहते हैं, सांड की मृत्यु पर यहां के एक सेठ ने ऐसा मृत्युभोज किया जिसमें सात तरह की मिठाइयां बनवाई गई और सारे नगर को जीमने के लिए बुलाया गया। उसी समय एक बड़े चबूतरे पर सांड की मूर्ति स्थापित की गई और शिलालेख लगवाया गया जिसे आज भी पढ़ा जा सकता है। उस पर अंकित लेख इस प्रकार है-

श्री गणेशजी।। श्री गोपीनाथजी गुलराजजी सिंघानिया माह सुदी 12 शुक्रवार सं. 1930 श्रीजी सरण हुया उमर वर्ष 50 का जिकालर सांड छोड्यो जै सांड को स्वर्गवास हुयो भादवा सुदी 15 गुरूवार सं. 1945 न जै सांड को यो च्युतरो करायो।

कई जगह सांड की मृत्यु हो जाने पर उसकी गाजे-बाजे के साथ शव-यात्रा निकाली जाती है। ऐसी स्थिति में उसे कफन ओढ़ाकर भैंसागाड़ी में लादकर पूरे कस्बे में घुमाया जाता है। पुष्प गुलाल से उसे सम्मान-श्रद्धाभाव दिये जाते हैं। धूप-अगरबत्ती की जाती है। बीकानेर के पुनास गांव के लोगों ने तो सांड की मृत्यु पर उसकी समाधि बनाई और चौतरफा वृक्ष लगाये। नाथद्वारा में तो एकबार एक सांड की शव-यात्रा निकाल कर उसे दो बोरी नमक के साथ दफनाया गया। उदयपुर के श्मशान में सती की चबूतरी के पास सांड की चबूतरी बनी हुई है।

बन्दर को हनुमान का रूप माना जाता है। इसकी मृत्यु पर तो सजी-सजाई डोल निकाली जाती है जिसमें बन्दर को बैठा हुआ रखा जाता है। कई जगह रात्रि जागरण तथा हवन आदि किये जाते हैं। समाधि देने पर चबूतरा बनाया जाता है और दाह-संस्कार कर चंदन, नारियल दिये जाते हैं। रेवाड़ी के चौक बाजार में हनुमानजी की मूर्ति के चरणों में शरीर छोड़ने वाले बन्दर को जगनगेट के पास वाले ठठेरों के बगीचों में समाधिस्थ किया गया। कुचेरा में तो एक बन्दर की विद्युत करंट से मृत्यु होने पर उसकी डोल निकाली गई। कहते हैं, मरते वक्त उसके मुंह से 'राम' शब्द सुनाई दिया। इस बन्दर को यहां से लीराई ले जाया गया और किसी तरह उसकी यादगार बनाये रखने के लिए एक समिति का निर्माण किया गया जिसने 'करंट बालाजी' के नाम से एक मंदिर का निर्माण किया।

सांपों की मृत्यु पर भी इसी तरह के विचित्र क्रियाकर्म किये जाते हैं। जैसलमेर में तो सांप को कफन देकर समाधिस्थ करते हैं। भवानी मंडी के निवासी रामप्रताप तेली ने तो अपने कुए पर रह रहे सर्पराज की मृत्यु होने पर उसे चंदन का दाग दिया और विधिवत क्रियाकर्म करने के उपरांत उसके अवशेष लेकर हरिद्वार की यात्रा की और गंगाजी में उसकी अस्थियां प्रवाहित की।

कुत्तों की मृत्यु पर तो तालाब तथा छतरी तक बनाये गये हैं। जोधपुर में एक बणजारे ने अपने प्रिय पात्र रातिया नामक कुत्ते की यादगार में एक नाडा, तालाब व छतरी बनवाई। यही इलाका जब बस्ती में परिवर्तित हुआ तो उसका नामकरण ही रातिया तथा नाड़ा के सम्मिलित रूप में 'रातानाड़ा' हो गया जो आज भी इसी नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि यहां के बालसमंद उद्यान में जोधपुर के राजपरिवार के कुत्तों के कई स्मारक हैं। ये स्मारक इस परिवार के स्वामीभक्त कुत्ते टेनी, पिदगी, ब्यूटी, शायर, किवी, फार्म, काजी, चांग, मायल, मिसचीफ मेकर आदि के हैं।

जनवरी 1977 में नसीराबाद के सायरओली बाजार में शेरसिंह नामक कुत्ते की मृत्यु पर बैंडबाजों तथा फूल-गुलाल की उछाल के साथ शवयात्रा निकाली गई। पूरे बारह दिन तक उसका शोक मनाया गया। बारहवें दिन नगर के तमाम कुत्तों को गुल्लों (गुलगुलों तथा रसगुल्लों) का भोजन कराया गया। इस दिन खूब भजन-कीर्तन हुए। एक कूकरसिंह नामक कुत्ते को शेरसिंह का उत्तराधिकारी बनाया गया। फलस्वरूप उसके पगड़ी बंधाई की रस्म पूरी की गई। रात को अच्छी रोशनी की गई। इस अवसर पर कुत्ते की यादगार को बनाए रखने के लिए फोटो तक खींचवाए गए। उदयपुर के गुलाबबाग में कुतिया की स्मृति में किसी महारानी की बनाई हुई छतरी है।

मुगल बादशाह अकबर को एक हथिनी बहुत प्रिय थी जिस पर बैठकर वे शिकार को जाया करते थे। इस हथिनी ने कई बार बादशाह की रक्षा की। जब वह मर गई तो बादशाह ने फतहपुर सीकरी में इसकी स्मृति में एक मीनार बनवाई जो 'हिरण मीनार' के नाम से प्रसिद्ध है।

बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के स्मारक के पास मोरों का स्मारक भी अपने में बड़ी दिलचस्प घटना लिये है। कहते हैं जब महाराजा अनूपसिंह की मृत्यु के बाद उनका दाह संस्कार किया जा रहा था तो पास ही के एक वृक्ष से एक-एक करके कई मोर कूद कर चिता में जल मरे। लोग जब उन्हें बचाने लगे तो कहते हैं, चिता से आवाज गूंजी-'इन्हें मत बचाओ, जलने दो। ये महाराजा के ही पिछले जन्म के राज परिवार के सदस्य हैं। जलने से ही इनकी सद्गति होगी।' तब इनका भी वहां पास में स्मारक बनाया गया।

तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले की पहाड़ी के शिखर पर एक हाथी के दांत का स्मारक बना हुआ है। कहते हैं, पहाड़ी पर बने शिव मन्दिर में प्रतिदिन एक हाथी आया करता था जिसके एक ही दांत था। जब वह मर गया तो शिव-भक्तों ने उसका एक स्मारक बनाकर उस दांत की भी वहीं स्थापना कर दी।

हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी ऐसी घटनाएं हुई हैं। रोम में एक बार रात्रि को टाइवर नदी में बाढ़ आ गई। इसकी सूचना मुर्गों ने बांग देकर लोगों को दी। लोग जाग गए और अपना कीमती सामान आदि ले सुरक्षित हो गए। रोमवासी मुर्गों की इस बात से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने उनकी स्मृति में नदी पर एक पुल बनवा दिया।

अमेरिका के एक गांव में एकबार पकी फसल पर भयानक टिड्डी दल उमड़ पड़ा। लोगबाग बहुत परेशान हो गये। उसी समय देव योग से चीलों का समूह आ पड़ा जिसने टिड्डी दल का खत्मा कर दिया। इस पर गांव वालों ने चीलों का एहसान माना और एक स्मारक बना दिया। यह बात 150 वर्ष पुरानी कही जाती है।

सच तो यह है कि पशुओं के बिना मनुष्य अपना जीवन सूना मानता है। मनुष्य की यदि कोई मजबूरी नहीं हो तो कोई मनुष्य ऐसा नहीं मिलेगा जो अपने साथ कोई न कोई जानवर नहीं रखना चाहेगा।

जानवरों के प्रति मनुष्य का यह प्रेम और ममत्व यह सिद्ध करता है कि गुणों की पूजा का प्रत्येक प्राणी अधिकारी है चाहे वह जानवर ही क्यों न हो। महाराणा प्रताप का प्यारा साथी चेटक भी प्रताप की ही तरह अमर हो गया। हल्दीघाटी के मैदान में बनी उसकी समाधि प्रताप के प्रति उसकी स्वामीभक्ति और शौर्य वीरत्व के कई इतिहास पृष्ठ खोल देती है।

दिव्य ज्योति का आभास हुआ पं. श्रीनाथ आचार्य को

'जिन खोजा तिन पाइया' के अनुसार कोई भी प्रयास निष्फल नहीं जाता पर प्रयास 'पड़ा गोबर-धूल लेकर उठता' है वाली कहावत सिद्ध करता है। अपने प्रयासों में मैंने अनेक अद्भुत लोगों से भेंट की है। ऐसी ही भेंट 13 जुलाई 1976 को उदयपुर की छोटी ब्रह्मपुरी के अधिकारी भवन में रह रहे पं. श्रीनाथ आचार्य से हुई। उन्होंने अपनी उम्र तो नहीं बताई पर परिजनों से पता चला कि वे 92 वर्ष के थे।

जयपुर की ब्रह्मपुरी निवासी नानजी पंड्या पं. श्रीनाथजी के गुरु थे। टोडारामसिंह में पंडितजी का जन्म हुआ। जब वे सौलह वर्ष के थे, यज्ञोपवीत हुआ पर उससे दो वर्ष पूर्व ही वे यजुर्वेद कण्ठस्थ कर बड़ी बुलन्दगी से उसका सस्वर पाठ करने लग गये थे। चार बार रंगून हो आये। माह भर कलकत्ता रहे। गुजराती, राजस्थानी के अच्छे जानकार थे। ऋग्वेद भी कण्ठस्थ था। हाथ कंगन को आरसी क्या, एकासन बैठकर बुलन्द आवाज में मेरे सम्मुख उच्चारण करने लगे।

बोले, वेदों में सारी समस्याओं का समाधान है। कई बार उन्हें दिव्य ज्योति का आभास हुआ। प्रत्येक बाधा का निवारण वेद मंत्रों में मिल जायेगा। वेद, तंत्र, मंत्र और यंत्र ; ये चारों समाधानकारक हैं। उन्होंने सबके प्रयोग किये। वर्षा बुलाने, टीड्डीदल भगाने जैसे प्रयोग कर उन्होंने वेद मंत्रों को कई बार साधा। कई अनुष्ठान उनके द्वारा हुए जो सभी सफल फलदायी हुए। वे उस उम्र में भी चार बजे उठकर पांच-छह घण्टा नियमित साधना करते। वाणी सिद्ध भी थे। शराब-मांस से सदैव परहेज रखते हुए अनेक चमत्कार घरवालों ने भी देखे। शिव शक्ति के बड़े उपासक थे।

घरवालों ने बताया कि आज पंडितजी ने मेरे सामने जिस तरह दिल खोलकर जो बातें बताईं वे उन्हें भी मालूम नहीं थीं इसलिए मेरे साथ वे भी धन्य हुए। **-म. भा.**

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 मार्च 2021

सम्पादकीय

शोध में अबोध-बोध की बढ़त

घरेलू उपयोग की गैस और पेट्रोल-डीजल की दिनोंदिन बढ़ती जा रही कीमतों में वृद्धि की तरह विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों द्वारा किये जा रहे शोधकार्यों में भी आये दिन चौर्यकला की घटनाओं में बढ़त की खबरें सुनने में आ रही हैं जो निश्चय ही गहन चिन्तामूलक हैं। कौन कर-करा रहा है यह सब? कौन कहां किसे कैसे पकड़े? मक्कड़जाल की तरह उलझा हुआ यह घटनाक्रम द्रोपदी के चीर की तरह क्या बढ़ता ही जायेगा?

शोधार्थियों की समस्याएं हैं, विषय उनकी चाह का नहीं होकर उन पर थोप दिया जाता है। सम्बन्धित पुस्तकें कहां से उन्हें उपलब्ध हों, ठीक से कोई नहीं बता पाता। जहां कहीं वे हैं भी तो सहज उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। यदि विषय फील्ड का है तो वे वहां कैसे, किसके माध्यम से पहुंचें। कई बार शोधार्थी सर्विस में होने के कारण शोध के साथ न्याय नहीं कर सकता। कुछ लेनदेन पर लिखनेवाले जैसे तैसे काम पूरा कर देते हैं पर वह अत्यन्त पोचा होने पर भी उपाधि मिल जाती है। परीक्षक आपस में मिलेजुले होने के कारण तटस्थ निर्णय नहीं दे पाते हैं।

ऐसा भी हुआ जब परीक्षकों की सहमति एक-दूसरे के विपरीत होती है। कई बार गाइड और विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी उपाधि प्रदान करने में रूचिशील होते हैं। प्रत्यक्ष साक्षात्कार अब मात्र दिखावा और खानापूर्ति बनकर रह गया है। परीक्षक को प्रारम्भ में ही कल्पनातीत स्वागत-सम्मान-बहुमान से लाद दिया जाता है। साक्षात्कार पूर्व ही बनेबनाये टाईपीय सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कराने की खानापूर्ति करली जाती है।

यह भी सुना गया जब शोधार्थी को विधिवत उपाधि प्रदान कर दी जाने पर लगभग सम्पूर्ण शोधप्रबन्ध ही चौर्यकला बोध से प्रकाशित हो गया। अखबारों के माध्यम से ऐसा वाकया जगजाहिर भी होगया तब भी उसका कुछ नहीं हुआ। हो तो क्या हो? कौन क्या करे? ऐसे कोई नियम भी हैं क्या? अन्य विश्वविद्यालयों में जिस विषय पर कार्य हो गया, उसकी जानकारी भी अन्यों को नहीं होती। जो शोधप्रबन्ध स्वीकृत हो जाते हैं उनका कहीं रिव्यु भी नहीं छपता।

होना तो यह चाहिये कि प्रत्येक विश्वविद्यालय से ऐसी शोधपत्रिका प्रकाशित हो जिसमें इन सबका उल्लेख हो और सारे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में उसकी सहज पहुंच हो। अन्य भी उसे समूल्य खरीद सकें। अत: वह कम से कम शुल्क लिये हो।

वे लोग जो एक लम्बे अर्से से विभिन्न विषयों पर प्रामाणिक कार्य कर रहे हैं उनके पास पहुंचकर आये दिन शोधार्थी मार्गदर्शित होते हैं किन्तु वे गाइड बनने की तथाकथित योग्यता नहीं रखते जबकि शेष सभी तरह से वे सवाये रूप में योग्यतर-योग्यतम होकर अपनेआप में सम्पूर्ण संस्था रूप लिये होते हैं।

ऐसे विद्वानों और ऐसी मानी-चुनी संस्थाएं विश्वविद्यालयों से मान्य होनी चाहिएं। यह क्या बात हुई कि उन मनीषियों का लेखन तो शोध को पुष्ट बनाने के लिए प्रमाणस्वरूप गवाह बनता है पर वे गाइड नहीं हो सकते। दूसरी ओर गाइड जो सीमित विषय का ही विद्वान होता है पर अपने जीवनकाल में अनेक विभिन्न विषयों के छात्रों को गाइड करने की क्षमता लिए होता है। वह परीक्षक भी होता है। सबकुछ होता है।

जो भी हो, जब अनेक विधाओं की समस्याओं और चुनौतियों पर भी आजकल शोधप्रबन्ध लिखे जा रहे हैं तब क्या यह उम्मीद करना वाजिब ही होगा कि शोध करने-कराने पर भी जो चुनौतियां हावी हो रही हैं उन पर भी कोई शोधप्रबन्ध लिखा जाय!

पाठकों के पत्र

शब्द के साथ सार्थक रंजन

शब्द रंजन पढ़ता रहता हूं इसलिए भी कि उसमें पठनीय सामग्री छपती है वर्ना तो अब पत्र-पत्रिकाओं में और वह भी साप्ताहिक, पाक्षिकों में पढ़ने जैसी सामग्री का अभाव ही देखने को मिलता है।

आप पता नहीं कहां-कहां से निकालकर यह सब सामग्री देते हैं। ऐसी-ऐसी चीजें देते हैं जिनके सम्बन्ध में सोच भी नहीं पाते। इसमें जो सामग्री प्रकाशित होती है वह ठेठ पारम्परिक है, पैंदे में है, हमारी जड़ में है जबकि आज का वैज्ञानिक ठेठ ऊपर अन्तरिक्ष को नापने लगा है।

हमारे यहां तो कहा भी 'यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे। यत् ब्रह्मांडे तत् पिंडे।' एक ओर तो दूसरा छोर। सारा आलोक लोक का ही कमाल है। यह यात्रा शून्य से सागर और सागर से शून्य की ही तो है। एक को भूलकर अथवा छोड़कर दूसरे को प्राप्त कर भी नहीं सकते। सारा खेला ही द्वैत से अद्वैत और अद्वैत से द्वैत का है। शब्द रंजन के साथ सार्थक रंजन कोई शब्द रंजन से खीखे।

- ए. एल. दमामी, राजसमंद

कोविड से बचने के उपाय जैन जीवनशैली के सर्वथा उपयुक्त

- अभय श्रीश्रीमाल -

जैनधर्म संसार का प्राचीनतम जीवन्त धर्म है। अपने अहिंसामय, अनेकांतमय, तर्कसंगत, पर्यावरणसंगत और कालजयी सिद्धान्तों के कारण यह धर्म सदैव अधिक प्रासंगिक रहा। इसकी विशिष्ट प्रासंगिकता आज भी है और आगे भी सदैव बनी रहेगी। अपनी सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रासंगिकता के कारण जैनधर्म एक वैज्ञानिक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित है। यह धर्म सबको विवेक के साथ जीने की कला सिखाता है, इसलिए यह जीवनधर्म भी है।

विश्वभर में फैली कोविड-19 महामारी से बचाव के जो उपाय बताए जा रहे हैं उनमें से अधिकांशत: जैन जीवनशैली के अनुरूप हैं। शाकाहार, शाकाहार में भी शुद्ध-सात्विक आहार, शुद्धाहार में भी मात्रा, समय, भावना आदि का विवेक, स्वच्छता, मुँहपत्ती का उपयोग, पारस्परिक सुरक्षित दूरी यानी संघटा नहीं लगाना, पृथक्वास अर्थात् विविक्त शय्यासन, संयममय जीवन, प्रासुक छने जल का उपयोग आदि अनेक बातें जैन जीवनशैली के अंग हैं।

जैनधर्म का जीवन विज्ञान, अहिंसा व संयम से अनुप्राणित तथा अनुकरणीय है। यह समाज, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं आध्यात्मिक विकास के लिए भी सर्वाधिक अनुकूल है। इस सम्बन्ध में कई उदाहरण दिये जा सकते हैं। वर्तमान की विश्वभर में फैली कोविड-19 महामारी का उदाहरण ले सकते हैं। इस महामारी से बचाव के जो उपाय बताए जा रहे हैं उनमें से अधिकांशत: जैन जीवनशैली के अनुरूप हैं। शाकाहार, शाकाहार में भी शुद्ध-सात्विक आहार, शुद्धाहार में भी मात्रा, समय, भावना आदि का विवेक, स्वच्छता, मुँहपत्ती का उपयोग, पारस्परिक सुरक्षित दूरी यानी संघटा नहीं लगाना, पृथक्वास अर्थात् विविक्त शय्यासन, संयममय जीवन, प्रासुक छने जल का उपयोग आदि अनेक बातें जैन जीवनशैली के अंग हैं।

पूर्व की बात करें तो बीसवीं सदी के अस्सी के दशक में राजस्थान और मध्यप्रदेश के कई इलाकों में नारू यानी बाला रोग फैल गया था। एक विशेष कृमि से होने वाले इस रोग से मरीज को असह्य पीड़ा से गुजरना पड़ता था। इससे कितने ही रोगियों को अपनी जान भी गँवानी पड़ी। शासन की ओर से रोगियों के बारे में सांख्यिकीय आँकड़े जुटाये गये। तथ्य सामने आया कि जैनसमाज में नारू रोग के मरीज नगण्य संख्या में मिले। पता चला कि जैनी पानी छान कर पीते हैं और तप आदि की विशेष परिस्थितियों में पानी को छानने के अलावा उसे उबाल कर भी पीते हैं।

यह रोग जिस कृमि से होता था, उसके सूक्ष्म अण्डे अनछने पानी के माध्यम से मानव शरीर में पहुँच जाते थे। शरीर में पहुँचकर अण्डे अपना विकास करके कृमि बन जाते थे और आदमी रोगग्रस्त हो जाता था।

इसका पता चलने पर सरकार की ओर से यह धुआँधार प्रचार किया गया कि पानी छानकर पिया जाये। बात सिर्फ राजस्थान की नहीं, पूरी दुनिया की है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के करीब दो सौ राष्ट्रों में डेढ़ करोड़ मनुष्य हर साल अनछना पानी पीने से बीमार हो जाते हैं।

बात शुद्ध जल के सेवन तक ही सीमित नहीं है। जैनदर्शन में यह भी बताया गया है कि जल सजीव होता है, इसलिए जल का किसी भी रूप में अपव्यय नहीं करना चाहिये। जल-स्रोतों को प्रदूषित नहीं करना चाहिये। यही नहीं, जैनदर्शन में जल की ही भाँति पृथ्वी, अग्नि, वायु और वनस्पति को भी चेतनायुक्त बताया गया है। जैनदर्शन में एक इन्द्रिय वाले पाँचों पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति को स्थावर जीव माना गया है। जैनग्रंथों में जैसे जल-संयम का निर्देश है, वैसे ही पृथ्वी, अग्नि, वायु और वनस्पति के प्रति भी संयम के निर्देश हैं। आज पर्यावरण की दृष्टि से भी ये आगमिक निर्देश बहुत प्रासंगिक हो गये हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि संस्कार और संस्कृति की रक्षा के लिए समाज में साहित्यिक चेतना आवश्यक है। जिस समाज में जितनी अधिक साहित्यिक चेतना होती है, वह समाज उतना ही अधिक रचनात्मक और विचारशील होता है। जैनसमाज में स्वाध्याय की प्रवृत्ति साहित्यिक चेतना का एक अनुकरणीय आयाम है।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति से व्यक्ति बुराइयों से बचता है और अच्छाइयों को बचाता है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए समाज को विद्वानों एवं साहित्यकारों का महत्व समझना चाहिये। नित नई विधाओं में नवसृजन और नये अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिये।

आदिवासी कृषि गीतों पर शोध

उदयपुर (का. सं.)। आदिवासी समाज में प्रचलित कृषि सम्बन्धी लोकगीतों पर शोधाध्ययन हेतु 23 फरवरी को प्रहलादनगर अहमदाबाद निवासी चारूल-विनय दम्पती ने शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत से मुलाकात की।

कुल जमा ढाई घण्टे के दौरान डॉ. भानावत ने लोकक्षेत्र में अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों के अलावा राजस्थान तथा नजदीकी राज्यों में पिछले आधे दशक से सक्रिय रूप से कार्यरत विद्वानों तथा संस्थानों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उदयपुर में भारतीय लोककला मण्डल, साहित्य संस्थान तथा टी. आर. आई. तथा उससे जुड़े देवीलाल सामर, जनार्दनराय नागर एवं डॉ. नरेन्द्र व्यास के समय में हुए कार्यों तथा वहां से प्रकाशित प्रकाशनों और रंगायन, शोधपत्रिका तथा ट्राईब पत्रिकाओं के योगदान की चर्चा की। अहमदाबाद में डॉ. भगवानदास पटेल, भोपाल में बसंत निरगुणे तथा आदिवासी लोककला परिषद एवं बोली विकास अकादमी, मनासा में डॉ. पूरन सहगल, बासंवाड़ा में मालिनी काले, लखनऊ में डॉ. विद्याविन्दुसिंह, पटना में डॉ. उषा वर्मा तथा पूना में मालती शर्मा द्वारा किये उल्लेखनीय कार्यों से परिचित कराया।

चारूल-विनय ने बताया कि बनती कोशिश वे बारी-बारी से अपने यात्रा-क्रम में विविध संस्थानों तथा विद्वानों से भेंट करेंगे और उनके सहयोग से आदिवासी ग्रामों का भ्रमण कर कृषि सम्बन्धी गीत, गाथाएं, कहावतें, मुहावरे, शब्दावली तथा तौरतरीकों से रू-ब-रू होते वर्तमान में आ रही समस्या और चुनौतियों का भी अध्ययन करेंगे।

स्मृतियों के शिखर (118) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हिन्दी-राजस्थानी के सधे हुए साहित्यसेवी रहे विपिन जारोली

विपिनजी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमलजी महाराज के सम्पूर्ण साहित्य का सम्पादन कर जैन दिवाकर ज्योतिपुंज नाम से 14 खंडों का प्रकाशन है। दूसरा उल्लेखनीय कार्य आचार्य मानतुंग रचित संस्कृत साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय भक्तामर स्तोत्र के 121 पद्यानुवादों का संग्रह-संपादन है। दस वर्षों की शोध का ही यह परिणाम रहा कि विपिनजी ने 88 हिन्दी, 8 मराठी, 7 गुजराती, 2 राजस्थानी तथा मेवाड़ी, बंगला, कन्नड़, तमिल, उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी भाषा तक का अनुवाद वे प्राप्त कर सके। ये अनुवाद 1670 से 1993 तक के समय के हैं।

साहित्यसेवी विपिन जारोली का जन्म उदयपुर जिले के कानोड़ गांव में 16 जनवरी 1933 को हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय जवाहर विद्यापीठ में हुई। छोटीसादड़ी गोदावत जैन गुरुकुल से हाईस्कूल की पढ़ाई कर स्वयंपाठी के रूप में उज्जैन विक्रम विवि से स्नातक की डिग्री ली और राजस्थान विवि से पुस्तकालय विज्ञान में प्रमाणपत्रीय कोर्स कर जवाहर विद्यापीठ सीनियर सेकण्डरी स्कूल में पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर सेवाएं दीं।

कानोड़ में साहित्यिक गतिविधियों में जो अग्रणी रहे उनमें विपिनजी भी शीर्ष पंक्ति में थे जिन्होंने कविता-रचना से अपना सृजन प्रारंभ किया। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 6 जून 1956 को नेमिचंद 'भावुक' द्वारा जोधपुर में संचालित अंतरप्रांतीय कुमार साहित्य परिषद की शाखा स्थापित की।

इसका उद्घाटन पं. उदय जैन द्वारा हुआ। समारोह की अध्यक्षता राधामोहन पुरोहित ने की। इस अवसर पर आयोजित कविसम्मेलन में उदयपुर से योगेश 'अटल', कांकरोली से द्वारकेश पुरोहित तथा भींडर से जयसिंह 'जौहरी' आमंत्रित किए गए। स्थानीय कवियों में डॉ. नरेन्द्र भानावत, डूंगरसिंह पोखरना, श्रीचंद डूंगरवाल, सोहन धींग तथा मैं स्वयं था।

दूसरे ही दिन परिषद की कार्यकारिणी बनाई गई जिसमें डॉ. नरेन्द्र भानावत को अध्यक्ष तथा विपिन जारोली प्रधानमंत्री बने। बाहर पढ़नेवाले हम सभी साथी ग्रीष्मावकाश में मिलते और नियमित गोष्ठियां करते। विपिनजी लिखित 'मैं रूपा का राजमहल हूं, पंछी क्या तुम जान सकोगे' तथा सुहागरात पर 'मत उगो सूर्य पूरब के ठहरो, रात अभी लम्बी होने दो' कविताएं तब बड़ी चर्चित थीं।

उन्हीं दिनों 'ज्वार' नाम से हस्तलिखित पत्रिका प्रारंभ की जिसका पहला अंक दीवाली विशेषांक के रूप में मैंने तैयार किया। दूसरा अंक फरवरी-मार्च 1957 का श्रीचंद की हस्तलिपि में गणतंत्र विशेषांक के रूप में निकला। दोनों ही अंक मेरे संग्रह में उस काल के रचनाधर्मी साथियों की कई स्मृतियों का खजाना खोलते दृष्टिगोचर होते हैं। विपिनजी द्वारा एक पुस्तकालय भी प्रारंभ हुआ जिसके लिए हम लोगों ने पुस्तकीय सहयोग से उसे समृद्ध किया।

विपिनजी हिन्दी एवं राजस्थानी के सधे हुए रचनाकार थे। देश की शताधिक पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित हुईं। एक कुशल तथा दृष्टिवान सम्पादक के रूप में उन्होंने उदयपुर से प्रकाशित साप्ताहिक अरावली, प्रगति तथा कानोड़ विद्यापीठ से प्रकाशित मासिक वसुमती को संवारा वहीं कई अभिनंदन ग्रंथों तथा स्मृति ग्रंथों का सुसम्पादन किया। साहित्यसेवी के रूप में उन्हें कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। वे कई संस्थाओं से जुड़े रहकर साहित्य, शिक्षा तथा समाजसेवा के कार्यों में संलग्न रहकर निरन्तर अपने होने की पहचान देते रहे। वे अच्छे वक्ता, स्पष्ट भाषी तथा खरी-खरी बात कहनेवाले खरे इन्सान थे।

विपिन जारोली तथा डॉ. महेन्द्र भानावत

एक गांधीवादी चिंतक के रूप में उनकी उपस्थिति ने सबको प्रभावित किया। उनकी लिपि बहुत सुन्दर, मंजी हुई तथा भावप्रवण थी। वे सदा ही राष्ट्रवादी बने रहकर खद्दर पहनते मिले। अपने उसूलों के प्रति वे सदैव ईमानदार और सारे लोभ लालच छोड़कर अपने सत्व पर सचेष्ट और खरे बने रहे।

कई महत्वपूर्ण कार्यों में विपिनजी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमलजी महाराज के सम्पूर्ण साहित्य का सम्पादन कर जैन दिवाकर ज्योतिपुंज नाम से 14 खंडों का प्रकाशन है। इस उत्कृष्ट कार्य सम्पादन हेतु उन्हें अखिल भारतीय जैन दिवाकर संगठन समिति, जयपुर ने 51,000 का पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ. भानावत का अभिनंदन करते नाथूलालजी जारोली

इसी कार्य के लिए जयपुर के तालेड़ा पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट ने भी उन्हें 21,000 रूपये का पुरस्कार प्रदान किया। जैन दिवाकर समिति तथा डूंगला श्रावक संघ द्वारा 'दिवाकर रत्न' की उपाधि से भी वे विभूषित हुए। कुमार साहित्य परिषद ने उन्हें 'साहित्यसेवी' तथा मेरे द्वारा संस्थापित सम्प्रति संस्थान द्वारा 'लोकमान' सम्मान भी उन्हें प्रदान किया गया।

सुन्दर मुर्डिया

विपिनजी का दूसरा उल्लेखनीय कार्य आचार्य मानतुंग रचित संस्कृत साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय भक्तामर स्तोत्र के 121 पद्यानुवादों का संग्रह-संपादन है जिसका प्रकाशन सागर के श्री खेमचंद जैन चेरिटेबल ट्रस्ट ने किया।

लगभग दस वर्षों की शोध का ही यह परिणाम रहा कि विपिनजी 88 हिन्दी, 8 मराठी, 7 गुजराती, 2 राजस्थानी तथा मेवाड़ी, बंगला, कन्नड़, तमिल, उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी भाषा तक का अनुवाद प्राप्त कर सके। ये अनुवाद 1670 से 1993 तक के समय के हैं। विपिनजी ने अपना हिन्दी तथा राजस्थानी में किया गया अनुवाद भी इसमें दिया है। इस कार्य में पं. कमलकुमार जैन 'कुमुद' उनके विशेष संकलन-सम्पादन सहयोगी रहे हैं।

विपिनजी ने श्रेष्ठ अनुवादक के रूप में महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी तथा कल्याण मंदिर के श्लोकों का पद्यानुवाद किया। गीतांजलि के कुछ गीतों का राजस्थानी अनुवाद भी उनका चर्चित रहा। उन्होंने काव्यांजलि, मेरे गीत, चुनौती तथा वन्दना नाम से काव्य-संकलन भी दिये। सहृदय सृजनधर्मी, सुधि विचारक एवं आदर्श शिक्षक के साथ-साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी वे सदैव सजग रहे। अन्तर में अंधी परम्पराओं के प्रति सृजनात्मक विद्रोह की ज्वाला जब तक वे जीवित रहे, उनमें प्रज्वलित होती रही। सबके प्रति स्नेह और आत्मीयता का उमड़ाव उनकी मृदुल हंसी में हर समय प्रवहमान रहा। उनकी यह हंसी 19 मार्च 2012 को सदैव के लिए अलोप होगई।

यहीं विपिनजी के संगी-साथी अध्यापक सुन्दर मुर्डिया थे जो पं. उदय जैन के बाद जवाहर छात्रावास को संचालित करने का कमाल दिखाते रहे। साहित्यिक प्रवृत्तियों में उनकी बड़ी दिलचस्पी थी।

उन्हीं के कहने से मैंने वहां दो बार आकाशवाणी कवि सम्मेलन तथा साहित्य अकादमी और राजस्थानी साहित्य अकादमी के आयोजन करवाये। जो भी कवि-साहित्यकार आये वे अभिभूत हुए बिना नहीं रहे। उनके बाद भेरूसिंह राव 'क्रान्ति' मेरे अधिक सम्पर्क में आये। अब तो वहां वैसे कोई साथी नहीं रहे।

पं. उदय जैन

विपिन जारोली जब जवाहर विद्यापीठ से सेवामुक्त हुए तब कहीं अन्यत्र जाने का विचार लिये थे। जब मेरे समक्ष उन्होंने यह भावना व्यक्त की तो मैंने सुन्दरजी से कहा कि विपिनजी को अपने यहीं कहीं सम्मानजनक पद देने से वे कानोड़ में बने रहेंगे।

यह सोच उन्हें छात्रावास में पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर आसीन किया। इससे छात्रों तथा सुन्दरजी को भी बड़ा सम्बल मिला। उन्होंने वहां रह विद्यापीठ हायर सैकण्डरी जैसा ही विशाल पुस्तकालय विकसित किया। उसके बाद जितने भी साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित हुए, विपिनजी ही आगे रहकर सारा दायित्व निभाते रहे।

विपिनजी के बाद मेरा भेरूसिंह राव 'क्रान्ति' से घनिष्ट सम्पर्क बना। श्री राव भी वहीं स्कूल के प्रिंसिपल थे। सेवामुक्ति के बाद उनकी पुस्तकों के लोकार्पण पर मैं कानोड़ गया। एक समारोह में तो नन्द चतुर्वेदी को भी मैं ले गया। भेरूसिंह डिंगल चाल की कविता करने में सिद्ध थे। उन्होंने बालकों के लिए शिक्षाप्रद पुस्तकें भी लिखीं। फिर तो कानोड़ जब भी किसी खास प्रसंग पर जाना होता, भेरूसिंहजी से मिलता ही मिलता।

भेरूसिंह राव

श्री राव का पूर्व घराना कानोड़ ठिकाने से जुड़ा हुआ रहा। इस घराने के अच्छे कवि हुए जिन्होंने अपनी काव्य-शक्ति द्वारा युद्धों में भी अपना शौर्य दिखाया। ठिकाने के अन्तिम कवियों में हुए खुमाणसिंह, भभूतसिंह, देवीसिंह को मैंने भी देखा और याद पड़ता है उनसे उनकी रौद्र रसी दमदार कविताएं भी सुनीं।

यहीं भीण्डर के जयसिंह चौहान 'जौहरी' रहे जो राजस्थानी में बड़े टकसाली दोहे लिखते रहे। उनके दोहों में ऋतुओं के दोहे बड़े छविमान रहे। उनकी लिखी दो-एक पुस्तिकाएं भी मेरे संग्रह में हैं। वे बड़े ही विनीत, अल्पभाषी, मृदु व्यवहारी तथा सीधे सरल अध्यापक के रूप में आदर्श थे। वहीं हुए हर कार्यक्रम में वे अपनी भागीदारी निभाते रहे।

जयसिंह चौहान

विद्यापीठ के संस्थापक पं. उदय जैन के अंतरंग साथी के रूप में नाथूलाल जारोली ने बड़ी भूमिका निभाई। वे गणित के अध्यापक से होते-होते संचालक बने। वे चंदा लाने में भी जैन साहब के साथ रहे। मैं दोनों से पढ़ा।

एक समारोह में मेरा उल्लेखनीय अभिनंदन कर जारोली सा. ने मुझे जो मान दिया उससे मैं वामन बन अधवेंडा ही हो गया पर अंत तक उनके शिष्य रूप में गर्वित होता रहा। जब भी उनसे मिलता, कहते आप दोनों भाइयों ने हमारा तथा विद्यापीठ का ही नहीं कानोड़ का नाम भी रोशन किया।

अपनी जन्मभूमि के प्रति विपिनजी का लगाव अंत तक बना रहा। सच तो यह है कि उन्होंने कानोड़ को एक विशिष्ट पहचान दी और उसके पर्याय ही बन गये। कई मौकों पर, कई रूपों में उनका मेरा साथ रहा। उन्हीं के कारण मैं भी अपने जन्मस्थल से जुड़ा रहा। उनके बाद साहित्य का वह संसार तो नहीं रहा पर उनके सुपुत्र भरत से यदाकदा कुशलक्षेम हो जाती है।

उत्सवों की शोभा सूखी सब्जियां

- तुलसीदेवी -

वैसे तो न्यूनतम मात्रा में सूखी सब्जियों का प्रचलन सभी जगह देखने को मिलता है किन्तु राजस्थान में आम लोगों के खानपान में इन सब्जियों का महत्व विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। दैनिक जीवन में ही नहीं, खासकर पश्चिमी राजस्थान में तो सूखी सब्जियां विशिष्ट उत्सवों की शोभा बढ़ाती रही हैं।

उधर इनका थोकबंद व्यापार होता है और अब तो विदेशों तक में इनका स्वाद बढ़ता जा रहा है। इनमें मुख्यत: केर-सांगरी, कूगटा, फोफला, ग्वारफली, खेलरी, टींडसी, काचरी का सूखा साग उल्लेखनीय तौर पर परोसा जाता है।

खेजड़ी रेगिस्तान का मुख्य वृक्ष है जिसकी डाली से लेकर पत्ते, फल सभी उपयोगी हैं। इसकी फली ही सांगरी कहलाती है जो उबालकर सुखाई जाती है। पकने के बाद यह खोखा बन जाती है। इसके पत्ते लूम नाम से जाने जाते हैं जो बकरी तथा ऊंट का चारा अर्थात् घास-भोजन है।

फोग का रायता बड़ा स्वादिष्ट लगता है जो भोजन के अन्त में अधिक कारगर समझा जाता है। इससे भोजन शीघ्र पच जाता है। गवार को बीरानी गवार भी कहते हैं।

सर्दियों में बाजरे की रोटी के साथ फोफलिया तथा खेलरी का साग स्वाद बढ़ा देता है। टींडसी को काटकर उसके बीज निकाल सूखाकर फोफलिया तैयार किया जाता है। सूखी सब्जी का व्यापार बड़े स्तर पर होने के कारण अनेकों के रोजगार का यह जबर्दस्त आय का स्रोत बना है।

मेवाड़ में उस तरह का व्यापार तो नहीं होता पर फली, कोचला, वरकणा, काचरी, फोंतरी, गुठली जैसी सब्जियों की बहार देखने को मिलती है। पतली ग्वारफली, कोले के छिलके (कोचले), आम का छिलका (फोंतरी), आम का बीज (गुठली), सूखाकर बारहों मास सब्जी बनाई जाती है।

शीतला सप्तमी को जब ठण्डा यानी बासी खाना खाया जाता है तब मुख्यत: मीठे ढोकले के साथ दही-चावल का मीठा-चरका ओल्या बनाया जाता है और पूड़ी-परांठे के साथ सब्जी के रूप में वरकणा, गुठली, केर-सांगरी की सब्जी बनाई जाती है। आड़े दिन मक्की की रोटी के साथ फली, कोचला, काचरी, टींडोरी, परवल, टींडसी की सब्जी बनाई जाती है। पहले विवाह पर कन्या के घर बरातियों को जीमण में विशेषतौर से सत्कार-स्वरूप पापड़-फली परोसी जाती थी। अब यह भेद देखने को नहीं मिलता है।

कोनार्क नाइट राइडर्स टीम बनी चैंपियन

उदयपुर (वि.)। गोल्ड स्पोर्ट्स व वंडर सीमेंट क्रिकेट एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में

पैसिफिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स मैदान करणपुर में खेली गई मेवाड़ महिला प्रीमियर लीग के फाइनल मैच में कोनार्क नाइट राइडर्स ने यूपी रॉयल्स को 21 रनों से हराकर चैंपियनशिप अपने नाम की।

आयोजन सचिव रेणुका भारद्वाज ने बताया कि कोनार्क नाइट राइडर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए ऋतु पाल के 36, मनीषा कुंटल के 33 मंजू के 28 व नीतू के 23 रनों की मदद से 137 रन बनाए। यूपी रॉयल्स की अंशिका वर्मा व फराह ने 2-2 विकेट लिए। जवाब में यूपी की टीम 116 रन ही बना सकी। उसकी तरफ से पूजा ने 34 व शिवांगी गुप्ता ने 22 रन बनाए। ऋतु चौहान ने 2 विकेट लिए।

मैच के पश्चात आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप हवाई अड्डा निदेशक नंदिता भट्ट, अध्यक्ष नेहा पालीवाल, विशिष्ठ अतिथि गंगोत्री चौहान, अरुणा कवर, गोल्ड स्पोर्ट्स के निदेशक सुनील सोनी व गोविंद खंडेलवाल ने विजेता व उपविजेता टीम को ट्रॉफी व इनामी राशि के साथ ही सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज मनीषा कुंटल, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज अंशिका वर्मा, सर्वश्रेष्ठ फील्डर याशिका वर्मा व वूमेन ऑफ द टूर्नामेंट फराह को पुरस्कार प्रदान किए।

प्रतियोगिता के प्रायोजक सुनील सोनी ने कहा कि आगामी समय ओर बड़ा टूर्नामेंट कराया जाएगा। प्रतियोगिता के कमिश्नर मनोज चौधरी ने अतिथियों का आभार जताया। इस अवसर पर राजेन्द्र जैन, आर चंद्रा व यशवंत पालीवाल भी उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान जिंक सम्मानित

उदयपुर (वि.)। हिंदुस्तान जिंक को द इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटल्स आईआईएम ने नॉन-फेरसबेस्ट परफोर्मेंस अवार्ड-2020 (द्वितीय) से पुरस्कृत किया है। जिंक को यह पुरस्कार गुणवत्ता के राष्ट्रीय मानकों के स्तर पर बड़े एकीकृत विनिर्माण संयंत्रों की श्रेणी में प्रदान किया गया है। इस सम्मान की खासबात यह है कि कंपनी हमेशा अपने व्यवसाय में नए बदलावों को लागू करने और अपनाने के मामले में सबसे आगे रही है। पर्यावरण संरक्षण के लिए कंपनी ने बेहतर कदम उठाए हैं। इसी के परिणास्वरूप कंपनी ने इन बदलावों के लिए कई अवार्ड प्राप्त किये हैं। अगले पांच सालों में जिंक के सतत विकास लक्ष्य के तहत ग्रीन माइनिंग की दिशा में परिचालन में सकारात्मक परिवर्तन को सक्षम बनाने के लिए महत्वपूर्ण अवसर बनाने के लिए केंद्रित है। जिंक ने पानी की खपत अनुकूल करने, ऊर्जा उत्पादकता बढ़ाने, जलवायु परिवर्तन से निपटने और सुरक्षा की उन्नत तकनीकों के साथ कई पहल की है। जिंक को वैश्विक पर्यावरणीय गैर लाभकारी सीडीपी द्वारा कार्पोरेट जगत में अपने नेतृत्व के लिए भी मान्यता प्राप्त है।

नवजात की श्वांस नली का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने नवजात शिशु की श्वांस नली का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि एक जच्चा अपने नवजात शिशु को दूध नहीं पिला पा रही थी। इस पर बच्चे की जांच की गई तो पता चला कि नवजात शिशु की श्वांस नली और खाने की नली जुड़ी हुई थी। इस पर पिड्रियाट्रिक सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा एवं उनकी टीम ने शिशु का जटिल ऑपरेशन कर उसे नया जीवनदान दिया है। शिशु अभी स्वस्थ है।

अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किया मातृभाषा वेबसाइट का विमोचन

उदयपुर (वि.)। अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर निर्माण सोसायटी, कपासन, चित्तौड़गढ़ द्वारा तैयार राजस्थान की मेवाड़ी, ढुंढाड़ी, शेखावटी, हाड़ोती, बागड़ी, मारवाड़ी, मेवाती, ओड-राजपूत, बृजभाषा व वागड़ी भाषाओं की बेवसाइट्स का विमोचन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किया।

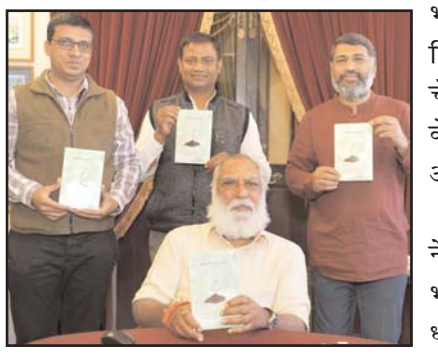

इस अवसर पर श्री मेवाड़ ने मेवाड़ी में कहा कि 'आपणी भाषा आपणी संस्कृति आपणी धरोहर है। आपणी भाषा रो सबां ने सम्मान करणो चावे और घर-परवार में आपणी बोली बोलणी चावे। अंग्रेजी, हिन्दी सब भाषा रे हाथे आपणी बोली रो ज्ञान भी वेणो चावे। राजस्थान री अतरी बोलियां वेबसाइट पे उपलब्ध वेगा या घणी खुशी री वात है।

इस दौरान निर्माण सोसायटी की ओर से प्रकाशित 'मेवाड़ी कावताँ' पुस्तक का विमोचन श्री मेवाड़, सोसायटी के मुख्य प्रबंधक बिन्नी अब्राहम, आर. एन. डिसुजा तथा मुकेशकुमार योगी द्वारा किया गया।

राज्यस्तरीय जीतो प्रीमियर लीग में उदयपुर टीम बनी विजेता

उदयपुर (वि.)। जीतो प्रीमियर लीग की चार दिवसीय राज्यस्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन भीलवाड़ा में किया गया। प्रतियोगिता में राजस्थान की 16 जीतो टीमों ने भाग लिया। फाइनल मैच जीतो यूथ विंग उदयपुर तथा जेआरबी भीलवाड़ा बुल्स के बीच हुआ। जेआरबी बुल्स ने पहले खेलते हुए 7 विकेट खोकर 137 रन बनाये। जवाब में उदयपुर की टीम ने कप्तान चिराग कोठारी के नेतृत्व में 4 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। उदयपुर टीम में स्पोंसर राजकुमार चौधरी थे।

फाइनल मैच में शानदार जीत पर उदयपुर पहुंची टीम का बुधवार को जीतो उदयपुर चैप्टर के चैयरमेन राजकुमार सुराणा, उदयपुर यूथ विंग के चेयरमेन आदित्य शाह, महासचिव कमल नाहटा तथा उदयपुर जीतो के सभी एक्ज्यूक्यूटिव सदस्यों ने सम्मान किया। संचालन कमल नाहटा ने किया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,
a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

विश्व के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम का नाम होगा नरेन्द्र मोदी स्टेडियम

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद में निर्मित दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम मोटेरा अब नरेंद्र मोदी स्टेडियम के नाम से जाना जाएगा। एक लाख 32 हजार दर्शकों की क्षमता वाले इस क्रिकेट ग्राउंड का 24 फरवरी को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उद्घाटन किया। इस दौरान गृहमंत्री अमित शाह भी मौजूद थे।

अमित शाह ने कहा कि मोदीजी जब गुजरात के मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने कहा कि हमें दो चीजों में आगे बढ़ना चाहिए। स्पोर्ट्स और सेना में भर्ती। मोदीजी ने इसकी शुरुआत की और आज सेना की भर्ती का कोटा खाली नहीं जाता है। जब स्टेडियम बनने की बात हुई तो उन्होंने ही कहा था कि गुजरात में जो भी बनेगा, वो विश्व में सबसे बड़ा होगा और अब यह हो गया। एक लाख 32 हजार क्रिकेट प्रेमी एक साथ स्टेडियम में क्रिकेट का लुत्फ उठा पाएं, ऐसा स्टेडियम बना है।

उन्होंने कहा कि मोटेरा में एक दिन में दो मैच भी खेलने हैं तो भी हो सकते हैं। बारिश आती है तो कितनी भी हो, आधे घंटे में मैच शुरू हो सकता है। स्टेडियम में एलईडी लाइट्स लगाई गई हैं जिनसे 40 से 50 प्रतिशत तक बिजली बचेगी। खिलाड़ी की परछाई ग्राउंड पर नहीं पड़ेगी। यहां

दुनिया का सबसे बड़ा और हाईटेक मीडिया रूम है। शाह ने कहा कि ये एन्क्लेव सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों और उच्चतम सिद्धांतों के आधार पर बने हैं। मोदीजी ने अहमदाबाद को हैरिटेज सिटी बनाया था और अब ये स्पोर्ट्स सिटी बनेगा। ट्रैक एंड फील्ड और फुटबॉल के लिए 50 हजार दर्शकों की क्षमता वाला स्टेडियम बनेगा। 15 हजार लोगों की क्षमता वाला ध्यानचंद स्टेडियम भी बना है और उसका उद्घाटन राष्ट्रपति करेंगे। यहां 3 हजार अपार्टमेंट बनेंगे, जिनमें 12 हजार 500 बच्चे कोचिंग पा सकेंगे। बारह हजार कार और 35 हजार टू व्हीलर की पार्किंग की व्यवस्था की गई है। एक शहर के भीतर एक शहर है।

गुजरात के उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल ने कहा कि मोटेरा स्टेडियम के बिल्कुल बगल में 251 करोड़ रुपए की लागत से दुनिया का सबसे बड़ा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनाया जाएगा।

क्रिकेट के साथ-साथ ही जो दुनिया की दूसरी बड़ी स्पोर्ट्स हैं, उन्हें भी इस कॉम्प्लेक्स में शामिल किया जाएगा। इसमें फुटबॉल, हॉकी समेत सभी इंडोर गेम्स शामिल होंगे। कॉम्प्लेक्स में 3 हजार खिलाड़ियों समेत 10 से 12 हजार लोगों की क्षमता होगी। साथ ही स्वीमिंग पूल की व्यवस्था भी होगी।

अमेज़न इंडिया की 'संभव' समिट 15 अप्रैल से

उदयपुर (वि.)। अमेज़न इंडिया ने 15 से 18 अप्रैल तक 'अमेज़न संभव' के दूसरे संस्करण की मेजबानी करेगा।

अमेज़न इंडिया के वीपी मनीष तिवारी ने कहा किसंभव 2021 में महत्वपूर्ण उद्योग और थॉट लीडर्स एक साथ आकर आत्मनिर्भर भारत को बनाने की दिशा के मार्ग पर चर्चा करेंगे और इसके लिए अमेज़न के साथ साझेदारियों के माध्यम से व्यवसायों एवं उद्यमियों के लिए संभावनाओं को तलाशा जाएगा। यह एक वर्चुअल समिट होगा, जिसकी मेजबानी भारत के विभिन्न सेक्टर्स, जैसे विनिर्माण, रिटेल, लॉजिस्टिक्स, आईटी/आईटीईएस, कंटेन्ट क्रिएटर्स, स्टार्ट-अप्स, ब्राण्ड्स और उद्यमियों में 'भारत के लिये असीम संभावनाएं खोलने' की थीम पर होगी।

अमेज़न संभव में भाग लेने के लिये 30,000 से ज्यादा लोगों के आने की उम्मीद है और वे 70 से ज्यादा वक्ताओं से सर्वश्रेष्ठ पद्धतियों और उद्योग के ट्रेंड्स के बारे में जानेंगे। समिट का मुख्य आकर्षण होगा वार्षिक 'अमेज़न संभव अवार्ड्स', जो व्यवसायों, नवाचार करने वाले लोगों को पहचान देता है।

किडनी से डेढ़ किलो वजनी गांठ निकाली

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक वर्षीय बच्चे की किडनी से डेढ़ किलो वजनी गांठ निकाल सफल ऑपरेशन किया है।

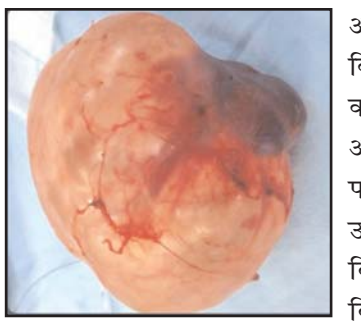

चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों एक वर्षीय बच्चे को पीआईएमएस में भर्ती कराया गया। जांच में पता चला कि बच्चे के पेट में बड़ी गांठ है। इस पर पिड्रियाट्रिक सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा एवं उनकी टीम ने बच्चे का ऑपरेशन कर डेढ़ किलो वजनी गांठ को बाहर निकाला। ऑपरेशन के पश्चात बच्चे का उपचार शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. विवेक पाराशर द्वारा किया गया। मेडिकल साइंस में इस रोग को मल्टी सिस्टिक डिस्प्लास्कि किडनी कहते हैं। बच्चा अब पूर्णत: स्वस्थ है।

158 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास

जयपुर-उदयपुर, (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वल्लभनगर, सहाड़ा, राजसमंद और सुजानगढ़ विधानसभा क्षेत्रों के लिए 158 करोड़ रूपए की लागत के 178 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

19 फरवरी को वीसी के माध्यम से चारों विधानसभा क्षेत्रों के दिवंगत विधायकों मास्टर भंवरलाल मेघवाल, कैलाश त्रिवेदी, श्रीमती किरण माहेश्वरी एवं गजेन्द्रसिंह शक्तावत का स्मरण करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार इन विधायकों द्वारा जनता से किए गए वादों को जरूर पूरा करेगी।

विकास से जुड़ी हर आवश्यकता का पूरा ध्यान रखेगी। चारों जिलों के प्रभारी मंत्रियों को भी निर्देश दिए हैं कि वे नियमित दौरा कर जनता की आकांक्षाओं को पूरा करें।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि श्री गहलोत के नेतृत्व में सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। एक संवेदनशील मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने एक विशेष पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से तकनीक का विकास हुआ है उसे देखते हुए युवा पीढ़ी को नए विजन के साथ गवर्नेंस से जोड़ना होगा। उन्होंने क्वालिटी एजुकेशन पर भी जोर दिया।

नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल ने कहा कि प्रदेशभर में स्वायत्त शासन विभाग के माध्यम से आधारभूत ढांचे को मजबूत करने का काम किया जा रहा है। प्रयास है कि यहां के लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हों।

जलदाय मंत्री बीडी कल्ला ने कहा कि जिन कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास हुआ है, उनमें से कई पेयजल परियोजनाएं हैं। विभाग का पूरा प्रयास रहेगा कि जिन योजनाओं का शिलान्यास हुआ है वे समय पर पूरी हों ताकि लोगों को इनका लाभ जल्द से जल्द मिल सके।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने कोविड-19 के साथ-साथ टीकाकरण का भी बेहतर प्रबंधन किया है। पूरे देश में इसकी सराहना हो रही है। अल्पसंख्यक मामलात मंत्री शाले मोहम्मद ने कहा कि प्रदेश में मदरसों के आधुनिकीकरण की दिशा में प्रभावी काम हो रहा है जिससे बच्चों को गुणवत्तायुक्त तालीम मिल सकेगी।

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 28.2.2021

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (7)

- देवीलाल सामर -

शिक्षा तथा सामुदायिक विकास के कार्य उनके जीवन के अनुकूल हों। उनके लिए मनोरंजन उपलब्ध किये जांय तो उनके स्वयं की मनोरंजन परम्परा को पुष्ट करनेवाले हों। ऐसी शिक्षा उन्हें दी जाय जिससे वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को गौरव की दृष्टि से देखें। उनकी दृष्टि इतनी विस्तृत बनाई जाय कि वे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को अपनी थाती समझें। वे प्रोफेसर, इंजीनियर अवश्य बनें, वे रेडियो, टेलीविजन का प्रयोग अवश्य करें, वे ऊंचे से ऊंचे पद भी प्राप्त करें परन्तु जब अपनी जाति के साथ नाचने-गाने का अवसर आये तो हीन भावना महसूस नहीं करें। अपनी जातीय पोशाक पहिनने एवं अपने पर्व-त्यौहार मनाने में गौरव का अनुभव करें।

मैं सरगूजा क्षेत्र में एक ऐसी बस्सी में भी गया जहां भारत सरकार ने आदिवासियों की एक बस्ती का निर्माण किया था। अच्छे खासे पक्के मकान बनायेगये। बीच अहाते में बगीचे लगायेगये। अस्पताल भी खुलगया। पाठशाला, रात्रिशाला भी खुलगई। सबको खेती के लिए तकाबियां भी मिलने लगी। रात्रि के मनोरंजन के लिए जगह-जगह रेडियो सेट लगे थे। खुले मैदान में फिल्में दिखाने की भी व्यवस्था थी। सबको नि:शुल्क कपड़े भी बंटे। लगभग 400 घर वहां बसाये गये। सब एक-दूसरे से जुड़े हुए सार्वजनिक पाखाने एवं टट्टियां भी बनाईगई। इरादा इन अर्धनग्न निर्धन नाचगान में व्यर्थ समय खर्च करनेवाले, उजड़ जंगली लोगों को जीवन की साधारण सुविधा प्रदान करके उनको नागरिक जीवन का आनन्द प्रदान करना था।

मेरे लिए बड़ा दिलचस्प अध्ययन था। दो-तीन दिन मैं वहीं ठहर गया। लगभग दो सौ-तीन सौ स्त्री-पुरुषों से मैंने इंटरव्यू लिया। मुझे लगा कि अब वे जितने दु:खी थे, उतने पहले नहीं थे। उनको रसोड़े का भोजन फीका लगता था। एक-दूसरे से भिड़े हुए घर कैदखाने जैसे लगते थे। आधुनिक मनोरंजन में उनको कोई रस नहीं आता था। वे चाहते थे, आसपास की पहाड़ियों पर चिड़ियाओं की तरह चहकें, खूब मिलकर गायें-नाचें। अपना खुद का बनाया हुआ लांदा खा मेलों, पर्व-उत्सवों में आनन्द मनावें। बदरंग कपड़े उनको बोझा लग रहे थे।

मैंने यह भी सुना कि शुरू में 600 लोग यहां बसाये गये थे। उनमें से 200 तो चुपके से कहीं भाग निकले। शेष 400 नर्क का जीवन जी रहे थे। उनके लड़कों को वहां के कारखानों में काम अवश्य सिखाया जाता परन्तु वे उस काम को अपने अनुकूल नहीं पाते।

मुझे एक किस्सा और याद आया, जब मैं अपने शोध-सर्वेक्षण दल के साथ एक आदिम गांव में था। पुलिस के एक कर्मचारी ने कहा कि सामरजी आपको एक नजारा दिखलाऊं। हम जीप पर चढ़कर एक ऐसे क्षेत्र में गये जहां पेड़ की डाल पर एक आदमी फांसी पर लटक गया था। उसका प्राणान्त हो चुका था। कई लोग वहां जमा थे। पूछने पर पता लगा कि इसी भिलाले आदिवासी ने गांव के मकई के खेत में से रात को कुछ भुट्टे चुरा लिये थे। सारी रात वह पश्चाताप करता रहा और अन्त में आत्मग्लानि के कारण स्वत: फांसी पर चढ़ गया।

यह अद्‌भुत और ह्रदय चीर देने वाला नजारा था। उससे पूर्व मैं उस गांव का सम्पूर्ण सर्वेक्षण कर चुका था। वहां के पुलिस थाने में कोई जुर्म रेकार्ड नहीं किया जाता था। तहसील में सब लोग हाथ पर हाथ बांधे बैठे रहते थे। लगान आदि स्वत: वहां आ जाता था। गांव में कभी अभाव की स्थिति आ जाती तो जिसके घर में अनाज होता वह सबको बांट कर खाते। गांव में

फागुन के चंग नृत्य पर कलाकारों की प्रस्तुति

किसी की शादी होती तो उसका सारा खर्च गांववाले बांट लेते। मौत-मरण पर तो मौत के घरवालों को बरस भर गांव वाले ही खिलाते।

उस गांव में मैं पुन: सात बरस बाद गया तो बदली हुई परिस्थितियां पाईं। वहां नाच-गान बरबस बन्द कराये गये। शहर का सामाजिक कार्यकर्ता वहां उनके उद्धार के लिए आ बैठा। सारी शहरी गंदगी वहां आगई। व्यापारी अपने व्यापार के लिए वहां आ बसा।

सबका शोषण करनेलगा। मेरा सर्वेक्षण इस बात पर था कि जिस क्षेत्र में कलात्मक वातावरण भरपूर होता है वहां लोग खूब नाचते-गाते, भजन-कीर्तन करते, उत्सव-पर्व मनाते, शादियों में रंग भरते जिससे उनकी भावना परिष्कृत होती है। उनसे च्युत हो जाने पर मनुष्य में विकृतियां आने लगती हैं।

मैं यह सब मन को उद्वेलित और आश्चर्य में डालने वाली बातें इसलिए नहीं लिखरहा हूं कि मैं शिक्षा में विश्वास नहीं रखता तथा मैं इन आदिवासियों को जंगली आस्था में ही रखने का पक्षपाती हूं तथा अन्य नागरिक की तरह जीवन जीने एवं सुविधा पाने का अधिकार नहीं मिलने का पक्षधर हूं।

मेरा मतलब केवल यही है कि जो भी शिक्षा तथा सामुदायिक विकास के कार्य उनके लिए खाले जाय वे उनके जीवन के अनुकूल हों। उनके घर बनायें अवश्य जाय पर पहाड़ियों के ऊंचे छोर पर एक-दूसरे से स्वतंत्र। उनके लिए वस्त्रों की व्यवस्था की जाय तो उनकी परम्परा के अनुकूल। उनके लिए मनोरंजन उपलब्ध किये जांय तो उनके स्वयं की मनोरंजन परम्परा को पुष्ट करनेवाले हों।

ऐसी शिक्षा उन्हें दी जाय जिससे वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को गौरव की दृष्टि से देखें। उनकी दृष्टि इतनी विस्तृत बनाई जाय कि वे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को अपनी थाती समझें। वे प्रोफेसर, इंजीनियर अवश्य बनें, वे रेडियो, टेलीविजन का प्रयोग अवश्य करें, वे ऊंचे से ऊंचे पद भी प्राप्त करें परन्तु जब अपनी जाति के साथ नाचने-गाने का अवसर आये तो हीन भावना महसूस नहीं करें। अवसर आने पर अपनी जातीय पोशाक पहिनने एवं अपने पर्व-त्यौहार मनाने में गौरव का अनुभव करें।

मैं जब हंगरी गया तो मैंने विशेष रूप से वहां के जिप्सी जीवन को निकट से देखा। उनमें से अधिकांश पढ़-लिख गये थे और आधुनिक सभ्यता से सराबौर थे परन्तु उनके बक्सों में उनकी जातीय पोशाक सुरक्षित रखी थी। विशिष्ट अवसरों पर वे उसका प्रयोग करते थे। उसी तरह नाचते-गाते एवं मौज मनाते थे।

आदिम जातियों के सांस्कृतिक सर्वेक्षण का कार्य अधिक समय तक नहीं चल सका। कारण यह था कि केन्द्रीय गृहमंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत की मृत्यु के साथ ही गृह मंत्रालय ने इस योजना का भी पटाक्षेप करदिया। हमने उसके बाद अपने काम को आगे बढ़ाने के प्रयत्न भी किये परन्तु बिना शासकीय मदद के यह काम हमारे लिए सम्भव नहीं था।

लोककला मण्डल पिछले तीन वर्षों तक आदिम संस्कृति के सर्वेक्षण-कार्य में ही सराबौर रहा। हमारी अन्य प्रवृत्तियां इस कार्य के कारण शिथिल ही रहीं। सन् 1958 में हमें बरबस अन्य कार्य हाथ में लेने पड़े। उनमें राजस्थान के लोकनृत्यों का सर्वेक्षण प्रमुख था।

सन् 1954 से 1958 तक हमारी अधिकांश शक्तियां शोधकार्य में लगीं। हमारा कुछ संरचना कार्य शिथिल सा पड़ गया। 1958 में भारत सरकार के सूचना और केन्द्रीय मंत्रालय के माध्यम से सामुदायिक विकास कार्य पर एक नृत्य-नाट्य-रचना की योजना विज्ञापित हुई। इसके लिए देश के सभी कला-रचयिताओं को दिल्ली आमंत्रित किया गया।

आमंत्रित कलाविदों में मैं भी सम्मिलित था। उस समय आकाशवाणी के महानिदेशक प्रसिद्ध कलामर्मज्ञ एवं विद्वान श्रीयुत जगदीशचन्द्रजी माथुर थे। तब सोंग और ड्रामा डिवीजन भी आकाशवाणी के अन्तर्गत ही चलता था।

इसका मुख्य लक्ष्य गीत-नाटक के माध्यम से जनता को देश की विविध प्रवृत्तियों से भिज्ञ एवं शिक्षित करवाना था। इस संभाग के अन्तर्गत सामुदायिक विकास विषयक नृत्य-नाटिका के रचना का प्रस्ताव था।

उस समय सूचना मंत्रालय का यह संगीत नाटक संभाग अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था। वह स्वयं कोई रचना न तो करता था न कोई उसका अपना कलादल ही था। उसका कार्य केवल विषयानुकूल कलादलों को सम्बद्ध करके उनकी कृतियों का प्रसार करना मात्र था।

श्रीयुत माथुर साहब ने सब कलाविदों के समक्ष अपनी योजना प्रस्तुत की और सरकार द्वारा इस कार्य के लिए दिये जाने वाले अनुदान की भी घोषणा की। सभी उपस्थित कला-रचयिताओं को एक माह के अन्दर-अन्दर अपनी नृत्य-नाटिका का आलेख एवं उसकी प्रस्तुतीकरण योजना भेजने को कहा और यह भी कहा कि मंत्रालय के विशेषज्ञों द्वारा उन आलेखों का परीक्षण होगा और सर्वश्रेष्ठ आलेखों को इस कार्य हेतु स्वीकार किया जाएगा।

मैंने अपना विशद आलेख 'इन्द्रपूजा' नाम से समय से पूर्व ही भेज दिया और एक माह के अन्दर-अन्दर निर्णय भी आ गया कि मेरा आलेख सर्वश्रेष्ठ घोषित हुआ है। यह वास्तव में बड़ी खुशी की बात थी। कई बधाईपत्र, तार भी मेरे पास आये मगर मैंने इस चयन को अपनी कसौटी मानकर जिम्मेदारी के बोझ से और चिंतित हो गया। किसी भी नृत्य नाटिका का आलेख तैयार करना इतना मुश्किल नहीं है जितना उसकी रचना करना।

मैंने इस कार्य में अपने सभी कलाकारों एवं सहयोगियों की मदद ली। जिस व्यक्ति की इस कार्य में मुझे सबसे अधिक मदद रही वे थे गुजरात के जानेमाने कलाकार श्री रणजीत शिकारी। श्री शिकारी पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु उनकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। वे धुनों के धनी थे। उनके द्वारा जो आलेख तैयार किया गया वह आकार-प्रकार में बहुत बड़ा और फैला हुआ था। उसे संक्षिप्त और यथावत करने में मुझे काफी समय लगा।

'इन्द्रपूजा' की रचना वास्तव में किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं थी। वह सब लोगों का एक संगठित प्रयास था। कहानी भी उसकी बड़ी रोचक थी। इन्द्रपूजा नाम की एक पारम्परिक पूजा राजस्थान में पहले से प्रचलित थी। उसी को आधार बनाकर यह नाटिका रचीगई। इस नाटिका में पुरुषार्थ और परिश्रम को महत्व दिया गया था तथा केवल भाग्य पर निर्भर न रहकर मेहनत से कठिन से कठिन काम पूरा करने की प्रेरणा थी।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।